Sanskritik aur Samajik Anusandhan
www.shodhjournal.com
ISSN: 2582-5852
Received: 14-07-2025, Accepted: 15-08-2025, Published: 30-09-2025
Volume 6, Issue 2, 2025, Page No. 6-9

महायान बौद्ध परम्परा में तन्त्रसाधना युक्त सम्प्रदायः एक विवेचन

मुनीम सिंह[1], डॉ० सुनीता सैनी[2]
[1] शोधार्थी, संस्कृत, पालि एवं प्राकृत विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक, हरियाणा, भारत
[2] शोध निर्देशिका, संस्कृत, पालि एवं प्राकृत विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक, हरियाणा, भारत

सारांश
बौद्ध धर्म के संस्थापक तथागत बुद्ध है। महात्मा बुद्ध का जन्म छठी शताब्दी ईसा पूर्व में हुआ था। इनका जीवन चार घटनाओं रोगग्रस्त, वृद्ध मृतक व संन्यासी ने बदल दिया, जिस कारण इन्होंने संन्यास अपना लिया। उसके पश्चात् पीपल वृक्ष के नीचे इन्हें ज्ञान की प्राप्ति हुई जिसे सम्बोधिकाल कहा जाता है। इनके उपदेश आम जनमानस की भाषा पालि एवं मागधी में थे। 80 वर्ष की आयु में इन्होंने महापरिनिर्वाण प्राप्त किया।

मूल शब्दः तन्त्रसाधना, महात्मा बुद्ध, महायान सम्प्रदाय

बौद्ध धर्म का विभाजन

तथागत बुद्ध के परिनिर्वाण के पश्चात् उनके प्रधान शिष्यों की सहायता से मगध की राजधानी राजगृह में प्रथम संगीति (सम्मेलन) की गयी। इसमें सुत्तपिटक व विनयपिटक को लिपिबद्ध किया गया। इसके 100 वर्ष पश्चात् ही विनय के कठोर नियमों को लेकर एक विरोध खड़ा हुआ। इसी विरोध को शान्त करने के लिए 326 वि०पू० में द्वितीय संगीति की गई। उसी संगीति में बौद्ध संघ के दो प्रमुख सम्प्रदाय खड़े हुए– स्थविरवादी व महासांघिक। विनय में परिवर्तन को स्वीकार न करने वाले भिक्खु स्थविरवादी (थेरवादी) कहे गए। समय के अनुसार विनय में परिवर्तन को स्वीकार करने वाले भिक्खुओं की संख्या अधिक होने के कारण महासांघिक कहा गया।[1]

हीनयान

हीनयान तथागत् बुद्ध के उपदेशों पर आधारित है। इस धर्म का आधार पालि साहित्य है। यह प्राचीन बौद्ध दर्शन की परम्परा को मानता है। इसी कारण इसे प्राचीन धर्म कहा गया है। हीनयान सम्प्रदाय लंका, श्याम, बर्मा आदि देशों में प्रचलित है। हीनयान ने सभी वस्तुओं को क्षणभंगुर कहा है। हीनयान के अनुसार जीवन का चरम लक्ष्य अर्हत् होना या निर्वाण प्राप्त करना है। निर्वाण का अर्थ है 'बुझ जाना'। जिस प्रकार दीपक के बुझने पर प्रकाश का अन्त हो जाता है उसी प्रकार निर्वाण प्राप्ति पर दुःखों का नाश हो जाता है।[2] हीनयान के नियम अत्यधिक कठोर होने के कारण सभी के लिए सम्भव नहीं है। इसलिए महायानियों ने हीनयान को 'छोटी गाड़ी' अथवा 'छोटा पन्थ' कहा है। हीनयान के अनुसार कम ही व्यक्ति जीवन के लक्ष्य–स्थान तक जा सकते हैं।[3]

महायान सम्प्रदाय

महायान का अर्थ ही होता है 'बड़ी गाड़ी' अथवा प्रशस्त मार्ग। इसे बड़ी गाड़ी या प्रशस्त मार्ग इसलिए कहा जाता है क्योंकि इसके द्वारा निर्देशित मार्ग पर असंख्य व्यक्ति चलकर चरम लक्ष्य को अपनाते हैं। इसे सहजयान भी कहा जाता है। महायान सम्प्रदाय कोरिया, जापान, चीन आदि देशों में प्रचलित है। महायानी अपनी मुक्ति की अपेक्षा संसार के समस्त जीवों की मुक्ति पर जोर देते हैं। महायानी संसार के समस्त प्राणियों के दुःखों का नाश करवाकर उन्हें निर्वाण प्राप्त करवाना अपने जीवन का उद्देश्य मानते है।[4] जम्बुद्वीप (भारत) की यात्रा करने आए विभिन्न विद्वानों ने भी बौद्ध धर्म की महायान शाखा का वर्णन अपने ग्रन्थों में किया है। चीनी यात्री फाह्यान अपने यात्रा वृतान्त में लिखते हैं कि जब वह खुतन जनपद पहुंचे तो वहाँ के राजा ने फाह्यान आदि को एक संघाराम (बुद्ध विहार) में सुखपूर्वक ठहराया। उस संघाराम का नाम 'गोमती संघाराम' था। यह महायान का बुद्ध विहार था। उसमें तीन हजार भिक्खु रहते थे। सब के सब महायान सम्प्रदाय के अनुयायी थे।[5]

महायान से अन्य उप–सम्प्रदायों का विकास

समय के साथ 'महायान सम्प्रदाय' सम्पूर्ण विश्व में फैल रहा था जिस कारण महायान से अनेक उप–सम्प्रदायों का भी उद्भव हुआ। इन सम्प्रदायों के द्वारा अनेक बोधिसत्त्वों की कल्पना ने जन्म लिया। फलतः बौद्ध–धर्म में प्रच्छन्न रूप से 'अवतारवाद' का जन्म हुआ। तथागत बुद्ध पर अलौकिकता आरोपित कर दी गई।[6] नौवीं शताब्दी में एक और आफत सिंहल में बौद्ध धर्म पर आने लगी। यह भारत में वज्रयान या तान्त्रिक बौद्ध धर्म के उत्कर्ष का समय था। सरहपा, शबरपा, लुइपा, कण्हपा जैसे महासिद्धों का चारों और अखंड प्रभाव छाया हुआ था। 819 ई० में इसी वज्रयान (वज्रपर्व) निकाय का एक भिक्खु लंका पहुंचा और उसने राजा मतबलसेन को अपना शिष्य बना लिया। अब रत्नकूट आदि सूत्रों का सम्मान बढ़ चला और उसके साथ–साथ तन्त्र–मन्त्र का प्रचार भी बढ़ा। अनुराधपुर में उत्खन्न करते समय विजयराम विहार के एक स्तूपावशेष में तेरह ताम्रपट्ट मिले हैं, जिनमें 8वीं–9वीं शताब्दी के अक्षरों में मन्त्र लिखे हुए हैं।[7] महायान की ही विकसित शाखाएं मन्त्रयान तथा वज्रयान है। इनमें मन्त्र तथा तन्त्र का साम्राज्य है। इसका विशेष प्रचार बंगाल, उड़ीसा तथा आसाम के प्रान्तों में हुआ है। बौद्धों में तन्त्र–मन्त्र का प्रचार मुख्य रूप से तिब्बत में हुआ है।[8]

महायान के परवर्ती विकास का बौद्ध आचार्यों ने विवेचन किया है। 'अद्वयवज्रसंग्रह' में संग्रहीत तत्त्वरत्नावली में महायान को दो भागों में विभाजित किया गया– पारमितानय और मंत्रनय। मंत्रनय (मंत्रयान) सामान्य व्यक्तियों के लिए अत्यधिक कठिन और गम्भीर था। इस ग्रन्थ को केवल 'तीक्ष्णेन्द्रियाधिकार सम्पन्न' लोगों के लिए ही उपयुक्त माना गया था। इसी मंत्रनय से परवर्ती वज्रयान, कालचक्रयानादि विकसित हुए।[9]

वज्रयान

महत्त्वपूर्ण सम्प्रदायों में तंत्र साधना विवेचन महायान के विकास का नाम 'मन्त्रयान' है जिसका अग्रिम विकास 'वज्रयान' की संज्ञा से अभिहित किया है। महायान की सौम्य अवस्था का नाम मंत्रयान है, उसका उग्ररूप वज्रयान माना गया है।[10] वज्रयान के साथ 84 सिद्धों का नाम सर्वदा सम्बद्ध रहता है। अत्यधिक विख्यात होने के कारण इन सिद्धों की गणना एक विशिष्ट श्रेणी

में की गई है। इन 84 सिद्धों का सम्पूर्ण परचिय हमें तिब्बतीय बौद्ध ग्रन्थों से पता चलता है। इन सिद्धों में पुरूषों के अतिरिक्त स्त्रियों का भी वर्णन मिलता है। यह परम्परा किसी एक शताब्दी की नहीं है। नवम शताब्दी से 12वीं शताब्दी के मध्य भाग तक के सिद्धाचार्य इसमें सम्मिलत किए गए हैं।[11]

तान्त्रिक तत्त्व जानने के लिए हठयोग का अनुशीलन परम आवश्यक है। हठयोग का मूल सिद्धान्त चन्द्र और सूर्य को एक अवस्थापन्न करना है। तंत्र की सांकेतिक भाषा में हकार और ठकार चन्द्र और सूर्य के वाचक है। इसलिए हकार और ठकार के योग अर्थात् हठयोग से अभिप्राय चन्द्र और सूर्य का एकीकरण है।[12]

सहजयान

योग साधना का पूर्णरूप सहजयान के रूप में विकसित हुआ जिसे 'अतियोग तन्त्रयान' कहा जाता है।[13] वज्रयान का ही दूसरा नाम 'सहजयान' है। सहजिया लोगों के मतानुसार 'सहजावस्था' को प्राप्त करना सिद्धि की पूर्णता है। सहजावस्था में मन और प्राण का संचार नहीं होता। सूर्य और चन्द्र का वहाँ प्रवेश करने का अधिकार नहीं है। चन्द्र और सूर्य इड़ा–पिङ्गलमय आवर्तनहीन काल–चक्र का ही अन्य नाम है। निर्वाण पद काल से अतीत होता है, इसलिए वहाँ चन्द्र और सूर्य के प्रवेश न होने की बात का सरहपा ने वर्णन किया है। इसी अवस्था का नाम 'उन्मीभाव' है। इस अवस्था में मन का लय स्वाभाविक व्यापार है। उस समय वायु का भी निरोध सम्पन्न होता है। सहजियों के अनुसार निर्वाण प्रत्येक व्यक्ति का निज स्वभाव (अपना संचार रूप) है। इस समय जो आनन्द की प्राप्ति होती है। उसी को महासुख कहते हैं इसी का नाम सहज है।[14]

सहजयान परम्परा वर्तमान में बाकुलों में जीवित है। इस यान का अपना कोई अलग साहित्य नहीं है। पदों और दोहों के रचयिता सहजयानी कवि वज्रयान के प्रसद्धि ग्रन्थों को ही अपने प्रमाण के रूप में स्वीकार करते हैं।[15]

कालचक्रयान

वज्रयान के उदय के कुछ समय पश्चात् एक नवीन बौद्ध तान्त्रिक सम्प्रदाय का जन्म हुआ जिसका नाम कालचक्रयान है।[16] कालचक्र क्या है? करुणा शून्यता मूर्ति है। वह मूर्ति काल रूप है, वहीं संवृति सत्य भी है। शून्यता को ही चक्र कहा गया है। यह कालचक्र का अद्वय रूप तथा अक्षर तत्त्व है।

करुणा शून्यतामूर्तिः कालः संवृतिरुपिणी।
शून्यता चक्रमित्युक्तं कालचक्रोऽद्वयोऽक्षरः।।[17]

यहाँ कालचक्र के ककार का अर्थ कारण के शांत होने पर, लकार से लय का बोध होता है। चकार से चंचल चित्त का, क्रकार से क्रमपूर्वक निरोध का बोध होता है।[18] कालचक्रयान ईसा की दसवीं शताब्दी के उतरार्द्ध में मध्यभारत में और बाद में कश्मीर से होकर तिब्बत में प्रचारित हुआ। तिब्बत में चौदहवीं, पन्द्रहवीं और 16वीं शताब्दी में बहुत से विद्वानों ने अनेक भाष्य और टीकाएं लिखी जो अभी तक उस देश में प्रचलित है। नालंदा में कालचक्रयान के प्रवर्तित होने की बात लिखी है। नालन्दा में विहार के प्रधान द्वार पर बहुत सी बातें उत्कीर्ण की गई थी जिनका संबंध कालचक्रयान के सिद्धान्तों से था।[19]

कालचक्रयान का सिद्धान्त है कि बाहर का समग्र ब्रह्माण्ड इस मानव शरीर के भीतर है। बाह्य जगत् के सूर्य–चन्द्र, आकाश–पाताल, भूमि, समस्त भुवन, विन्ध्य–हिमाचल आदि पर्वत, नदियाँ जितने प्रपंच है वे सभी इस देह में विद्यमान है। इस रहस्य को जानकर अपने शरीर की शुद्धि के सम्पादन का प्रयत्न करें। शरीर के द्वारा ही सिद्धि प्राप्त होती है, मुख्य साधन शरीर है। अतः कायशुद्धि होने पर ही प्राणशुद्धि तथा चित्तशुद्धि हो सकती है। काय, प्राण तथा चित्त का इतना घनिष्ठ सम्बन्ध है कि एक की शुद्धि हुए बिना दूसरे की विशुद्धता संघटित नहीं हो सकती और तीनों के बिना परमार्थ की प्राप्ति नितान्त असम्भाव्य है। इस प्रकार काय में ही कालचक्र का परिवर्तन सदा हुआ करता है।[20] कालचक्र में परम तत्त्व को 'आदिबुद्ध' कहते हैं। उनका न आदि है और न अन्त है।

अनादिनिधनों बुद्ध आदिबुद्धो निरन्वयः।।[21]

हेवज्रतन्त्र

हेवज्रतन्त्र की देशना तथागत ने निर्माणकाय द्वारा 80 वर्षों तक जम्बुद्वीप में निवास करते हुए बोधिसत्त्व वज्रगर्भ को की थी। इस हेवज्र का उपदेश किसी परम्परा द्वारा आया हुआ नहीं है, बल्कि स्वयं तथागत बुद्ध द्वारा वज्रगर्भ को उपदेश किया गया है।[22] हेवज्र में हे शब्द का अर्थ महाकरुणा है और वज्र का अर्थ प्रज्ञा है। इसलिए प्रज्ञा एवं उपायात्मक होने से इसे तन्त्र कहा गया है–

हे कारेण महाकरुणा वज्र प्रज्ञा च भण्यते।
प्रज्ञोपायात्मकं तन्त्रं।[23]

इस प्रकार यह तन्त्र प्रज्ञोपायात्मक है। प्रकृष्ट ज्ञान को प्रज्ञा कहते हैं। अद्वयज्ञान इसका अर्थ है। तन्त्र में प्रज्ञा का अर्थ शून्यता होता है। इस प्रकार यह हेवज्रतन्त्र शून्यता, करुणात्मक या प्रज्ञोपायात्मक है। हेवज्रमण्डल में हेरुक प्रधान देवता के रूप में उल्लिखित है जब हेरुक अपनी प्रज्ञा के साथ होते हैं तो हेवज्र कहलाते हैं।[24]

हेवज्रतन्त्र में हेवज्र का स्वरूप, साधक, मुद्रा, महामुद्रा, साधनास्थल आदि का विस्तार से विवेचन है। हेवज्रतन्त्र में हेवज्र इसके उपास्य है। वे कपालों की माला धारण करते हैं, वीर है तथा सदैव नैरात्मय से आश्लिष्ट रहते हैं। उनका वर्ण नीला है तथा वे अरुणाभा से युक्त है, उनके नेत्र बन्धुक पुष्प जैसे लाल है। पिंगल वर्ण एवं ऊर्ध्वोत्थित केश है। वे पाँच मुद्राओं से अलंकृत है। वे चक्र, कुण्डल, कण्ठी धारण किए हुए हैं। वे हाथ में सोने का आभूषण धारण किए हुए हैं। मेखला पहने हुए हैं। उनकी दृष्टि क्रोध से भरी है। अष्ट योगिनियों से परिवृत होकर वे श्मशान में क्रीड़ा करते है। वे चतुर्भुज है।[25]

कापालिकों का वर्णन ह्वेनसांग ने अपने यात्रा वृतान्त में भी किया है। कियापीशी (कपिसा) देश में यात्रा करते समय ह्वेनसांग ने देखा कुछ लोग अपने शरीर पर भस्म लपेटे हुए रहते हैं और कुछ कपालधारी हड्डियों की माला बनाकर सिर पर धारण किए रहते हैं।[26] यह साधक जिन स्थानों पर साधना करते हैं, उनका उल्लेख हेवज्रतन्त्र में किया गया है। वृक्ष के नीचे, श्मशान में, देवी के मन्दिर में अथवा विजन प्रान्त में से किसी भी स्थान में मुद्रा के साथ उक्त चर्चा करने का विधान है।[27] हेवज्रतन्त्र में विभिन्न प्रकार के मन्त्रों का वर्णन किया गया है जो तन्त्रविद्या से सम्बन्धित है। इसमें मेघों को फटाने की विधि बताई गई है। श्मशान के कपड़े (कफन) में बैठकर मन्त्र का जप करके मेघों को फटाना चाहिए। मन्त्र बताया गया है– ऊँ आर्य श्मशान प्रियाय– श्मशान जिसको अति प्रिय है ऐसे आर्य को हूँ हूँ फट् स्वाहा, यही मेघों को वर्षा कराने की विधि है। मेघानां स्फाटनं वक्ष्ये। श्मशानकर्पट उपविश्य मन्त्र जपेन स्फोटयेत्। ओं आर्य शमशान प्रियाय हूँ हूँ हूँ फट् स्वाहा, मेघस्फाटनविधिः।[28]

गुह्यसभाजतन्त्र

महायान बौद्ध सम्प्रदाय के तन्त्र साहित्य में गुह्यसमाजतन्त्र का भी उल्लेख मिलता है। गुह्यसमाजतन्त्र अति प्राचीनतम् ग्रन्थ है। इसमें वज्रयानानुसारि – तान्त्रिक अनुष्ठानों की विधियाँ निबद्ध

है।[29] गुह्यसमाज के रचनाकाल के निर्णय में बौद्ध तन्त्रयान के कतिपय विशिष्ट विद्वानों ने भिन्न–भिन्न प्रयास किए हैं। कुछ विद्वानों के अनुसार असंग जो तृतीय शताब्दी में थे, वे ही इस ग्रन्थ के रचनाकार है। गुह्यसमाजतन्त्र ऐसे मार्ग का उद्घाटन करता है जिसका अवलम्बन कर वर्तमान जीवन में ही सम्बोधिलाभ सम्भव होता है। गुह्यसमाज के अनुसार अपनी इन्द्रियवृति को चरितार्थ करके इसी जीवन में बोधि लाभ करना वज्रयानियों के लिए अनायास सम्भव है।[30]

त्रिविधं कायवाक्चिते गुह्यमित्यभिधीयते।
समाजं मीलनं प्रोक्तं सर्वबुद्धाभिधानकम्।।[31]

काय्, वाक्, चित्त के त्रिरुप को गुह्य कहा गया है। मिलन को समाज कहा गया है जिसे सर्व बुद्धों को अभिमान नाम के रूप में लिया जाता है।

महामायातन्त्रम्

महायान बौद्ध सम्प्रदाय में एक अन्य 'महामायातन्त्रम्' ग्रन्थ का भी उल्लेख किया गया है। जिसमें तन्त्र विद्या का ही वर्णन किया गया है। 'नित्याषोड्शिकार्णव' के अनुसार चौसठ प्रकार के तन्त्र ग्रन्थ है। उनमें से सर्वप्रथम 'महामायातन्त्र' का नाम उल्लेखित हुआ है। यह महामाया अपने आप में पूर्ण तन्त्र ग्रन्थ नहीं है। यह मुक्तक है। यह वज्रडाकिनी नामक परम गुह्यतन्त्र है। वही परिणति में 'महामाया' हो जाती है। इसलिए इसका नाम 'महामाया' हुआ है।[32]

'महामायातन्त्रम्' शास्त्र में सर्वप्रथम त्रिकाय स्वरुप वज्रडाकिनी को प्रणाम किया गया है–

नमः श्रीवज्रडाकिन्यै डाकिनीचक्रवर्तिने।
पंचज्ञानत्रिकायाय जगत्त्राणविधायिने।।[33]

डाकिनी चक्रवर्ती, संसार का त्राण करने वाली, पाँच ज्ञानों की दाता और त्रिकाय स्वरुप वज्रडाकिनी को नमस्कार है। इस 'महामायातन्त्रम्' ग्रन्थ में सम्पूर्ण सृष्टि का कारण महामाया को ही माना गया है।

यथा व्याप्तमिदं सर्वं ब्रह्मांड सचराचरम्।
उत्पतिः सर्वदेवानां ब्रह्मादीनां महर्द्धिका।।[34]

जिससे समग्र चराचर ब्रह्माण्ड व्याप्त हुआ है साथ ही जो देवताओं की उत्पत्ति कारिका है। महाप्रभाव युक्त होने से ब्रह्मा आदि की उत्पत्ति स्थान भी होने से यह महामाया कहलाती है।
महामाया तन्त्रम् शास्त्र में रहस्मय गुप्त तन्त्र के रहस्य को बताया है।

अथातो वज्रडाकिनीनां गुह्येश्वरीणां।
परमगुप्तं गुह्यं नाम तन्त्र प्रवेक्ष्ये।।[35]

अब, मैं परम गुह्येश्वरी, वज्रडाकिनियों के परम रहस्यमय गुप्त तन्त्र के रहस्य को बताने जा रहा हूँ।
अतः भिक्खुओं में आपसी विरोध के चलते बौद्ध धर्म दो सम्प्रदायों में विभाजित हो गया था हनियान व महायान सम्प्रदाय। महायान सम्प्रदाय के उद्भव के साथ–साथ उसमें तन्त्र–मन्त्र का भी उद्भव शुरू हो चुका था। महायान के विश्व में फैलने के साथ ही साथ उसमें से अनेक उप–सम्प्रदायों का भी विकास हुआ। महायान ने वज्रयान, मंत्रयान, सहजयान, कालचक्रयान, गुह्य समाज तन्त्र आदि को जन्म दिया। इन सम्प्रदायों के द्वारा ही अनेक बोधिसत्त्वों की कल्पना ने जन्म लिया। बौद्ध धर्म में प्रच्छन्न रूप से 'अवतारवाद' का जन्म हुआ। महात्मा बुद्ध पर अलौकिकता आरोपित कर दी गई। महायान सम्प्रदाय से विकसित सभी मत तन्त्र साधना पर आधारित है। इस सम्प्रदाय में विभिन्न तन्त्र ग्रन्थों की रचना हुई। महायान सम्प्रदाय में तन्त्र साधना मुख्य रूप से तिब्बत, पश्चिम बंगाल में प्रचलित है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. बौद्ध दर्शन मीमांसा, बलदेव उपाध्याय, पृ० 34
2. भारतीय दर्शन की रूपरेखा, प्रो० हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पृ० 136–137
3. भारतीय दर्शन की रूपरेखा, प्रो० हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पृ० 138
4. भारतीय दर्शन की रूपरेखा, प्रो० हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पृ० 138
5. चीनी बौद्ध यात्री फाहयान की भारत यात्रा, फाहयान, पृ० 87
6. बौद्ध तन्त्र शास्त्र, पं० राजेश दीक्षित, पृ० 42
7. बौद्ध संस्कृति, राहुल सांकृत्यायन, पृ० 77
8. बौद्ध दर्शन मीमांसा, बलदेव उपाध्याय, पृ० 33
9. बौद्ध कापालिक साधना और साहित्य, डॉ० नागेन्द्रनाथ उपाध्याय, पृ० 42–43
10. बौद्ध दर्शन मीमांसा, बलदेव उपाध्याय, पृ० 319
11. बौद्ध दर्शन मीमांसा, बलदेव उपा०, पृ० 322
12. बौद्ध दर्शन का उद्भव एवं विकास, डॉ० मनीष मेश्राम, पृ० 196
13. बौद्ध तन्त्र शास्त्र, पं० राजेश दीक्षित, पृ० 47
14. बौद्ध दर्शन का उद्भव एवं विकास, डॉ० मनीष मेश्राम, पृ० 196
15. बौद्ध तन्त्रशास्त्र, पं० राजेश दीक्षित, पृ० 48
16. बौद्ध दर्शन मीमांसा, बलदेव उपा०, पृ० 338
17. कालचक्रतन्त्रम्, काशीनाथ, न्यौपाने, पृ० 40
18. कालचक्रतन्त्रम्, काशीनाथ न्यौपोने, प्रथम उपक्रम प्रकरणम्, पृ० 41
19. तान्त्रिक बौद्ध साधना और साहित्य, नागेन्द्रनाथ उपा० डण।, पृ० 157
20. बौद्ध दर्शन मीमांसा, बलदेव उपाध्याय, पृ० 339
21. कालचक्रतन्त्रम्, काशीनाथ न्यौपाने, पृ० 40
22. हेवज्रतन्त्रम्, काशीनाथ न्यौपाने, पृ० 7
23. हेवज्रतन्त्रम्, न्यौपाने काशीनाथ, कारिका – 7
24. हेवज्रतन्त्रम्, काशीनाथ न्यौपाने, पृ० 7
25. हेवज्रतन्त्रम्, काशीनाथ, पृ० 8
26. चीनी यात्री ह्वेनसांग की भारत यात्रा, ह्वेनसांग, पृ० 57
27. हेवज्रतन्त्रम्, काशीनाथ न्यौपाने, पृ० 9
28. हेवज्रतन्त्रम्, मन्त्रपटल, काशीनाथ न्यौपाने, सूत्र – 21
29. श्री गुह्यसमाजतन्त्रम्, काशीनाथ न्यौपाने, पृ० 7
30. श्री गुह्यसमाजतन्त्रम्, काशीनाथ न्यौपाने, पृ० 9
31. श्री गुह्यसमाजतन्त्रम्, अष्टादशपटल, काशीनाथ कारिका, पृ० 24
32. महामायातन्त्रम्, काशीनाथ न्यौपाने, पृ० 8–9
33. कारिका 1, महामायातन्त्रम्, काशीनाथ न्यौपाने, प्रथम परिच्छेद
34. कारिका, महामायातन्त्रम्, प्रथम परिच्छेद, काशीनाथ न्यौपाने
35. कारिका, महामायातन्त्रम्, काशीनाथ न्यौपाने, प्रथम परिच्छेद
36. कालचक्रतन्त्रम्, काशीनाथ न्यौपाने, Indian mind, Varmari, 2013
37. तान्त्रिक बौद्ध साधना और साहित्य, नागेन्द्रनाथ उपाध्याय, एम०ए०, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, सम्वत्, 2015
38. फाह्यान की भारत यात्रा, फाह्यान, सम्यक प्रकाशन, 2022

39. बौद्ध कापालिक साधना और साहित्य, डॉ० नागेन्द्रनाथ उपाध्याय, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2009
40. बौद्ध तन्त्र शास्त्र, पं० राजेश दीक्षित, दीप पब्लिकेशन, आगरा–3
41. बौद्ध संस्कृति, राहुल सांकृत्यायन, सम्यक प्रकाशन, 2023, चतुर्थ प्रकाशन
42. बौद्ध दर्शन मीमांसा, बलदेव उपाध्याय, चौखम्बा विद्याभवन, 2011
43. बौद्ध दर्शन का उद्भव एवं विकास, डॉ० मनीष मेश्राम, कल्पना प्रकाशन, दिल्ली, 2021
44. भारतीय दर्शन की रूपरेखा, प्रो० हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, मोतीलाल बनारसीदास, 1993
45. भारतीय दर्शन, जगदीशचन्द्र मिश्र, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, 2016
46. महमायातन्त्रम्, काशीनाथ न्यौपाने, Indian mind, Varanasi, 2016
47. ह्वेनसांग की भारत यात्रा, ह्वेनसांग, सम्यक प्रकाशन, 2022
48. हेवज्रतन्त्रम्, काशीनाथ न्यौपाने, Indian mind, Varanasi, 2012
49. श्रीगुह्यसमाज तन्त्रम्, काशीनाथ न्यौपाने, Indian mind, Varanasi, 2012